



॥ श्री देवशयनी (हरिशयनी/आषाढी)

एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री देवशयनी (हरिशयनी/आषाढी) एकादशी व्रत कथा ॥

आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी देवशयनी एकादशी कहलाती है। इसे हरिशयनी एकादशी, आषाढी एकादशी तथा पद्मा एकादशी भी कहा जाता है। इसी दिन से भगवान श्रीहरि विष्णु क्षीरसागर में योगनिद्रा में चले जाते हैं और चातुर्मास का आरम्भ होता है। चार माह पश्चात कार्तिक शुक्ल एकादशी (देवोत्थानी एकादशी) को भगवान जागृत होते हैं।

इस एकादशी का माहात्म्य पद्म पुराण तथा भविष्य पुराण में वर्णित है।

श्री देवशयनी एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे केशव! आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है?

उसका माहात्म्य और व्रत कथा कृपया बताइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे राजन्! यह एकादशी 'देवशयनी एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत मनुष्य को समस्त पापों से मुक्त कर भगवान विष्णु की कृपा का पात्र बनाता है। अब इसकी पावन कथा सुनो।"

प्राचीन समय में मांधाता नामक एक महान धर्मात्मा और सत्यप्रिय राजा राज्य करते थे। उनके राज्य में प्रजा अत्यंत सुखी थी। सभी लोग धर्म का पालन करते थे और राज्य में किसी प्रकार का अन्याय नहीं था।

कुछ समय बाद राज्य में भयंकर अकाल पड़ गया। लगातार तीन वर्षों तक वर्षा नहीं हुई। खेत सूख गए, नदियाँ और तालाब सूख गए तथा अन्न का संकट उत्पन्न हो गया। प्रजा भूख और प्यास से अत्यंत दुःखी हो गई।

सभी प्रजाजन राजा मांधाता के पास पहुँचे और बोले—

"हे राजन्! आप धर्मात्मा राजा हैं, फिर भी हमारे राज्य में ऐसा भीषण अकाल क्यों पड़ा है? कृपया इसका उपाय कीजिए।"

राजा मांधाता स्वयं भी चिंतित हुए। वे समाधान की खोज में वन में गए और अनेक ऋषियों के आश्रमों में पहुँचे। अंत में उन्हें महान तपस्वी महर्षि अंगिरा के दर्शन हुए।

राजा ने उन्हें प्रणाम करके राज्य की सारी स्थिति बताई और अकाल दूर करने का उपाय पूछा।
महर्षि अंगिरा बोले—

"हे राजन्! यह सत्ययुग है। इस युग में धर्म का विशेष महत्व है। आपके राज्य में एक व्यक्ति अपने वर्ण के विपरीत कठोर तप कर रहा है, जिसके कारण धर्म का संतुलन बिगड़ गया है।"

राजा यह सुनकर दुःखी हुए और बोले—

"हे गुरुदेव! मैं किसी निर्दोष का वध नहीं कर सकता। कृपया कोई ऐसा उपाय बताइए जिससे प्रजा का कल्याण हो और किसी को कष्ट भी न पहुँचे।"

राजा की करुणा और धर्मनिष्ठा देखकर महर्षि अंगिरा प्रसन्न हुए और बोले

—

"हे राजन्! आप आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी का व्रत स्वयं करें तथा अपनी समस्त प्रजा से भी यह व्रत करवाएँ। भगवान श्रीहरि विष्णु की कृपा से राज्य का संकट दूर हो जाएगा।"

राजा मांधाता ने ऋषि की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने स्वयं तथा समस्त प्रजा के साथ श्रद्धा, भक्ति और विधिपूर्वक देवशयनी एकादशी का व्रत किया। भगवान श्रीविष्णु का पूजन, भजन और रात्रि-जागरण किया।

व्रत के पुण्य-प्रभाव से भगवान श्रीहरि प्रसन्न हुए। शीघ्र ही घनघोर वर्षा हुई, नदियाँ और सरोवर जल से भर गए, खेत लहलहा उठे और राज्य में पुनः सुख-समृद्धि लौट आई। प्रजा आनंदपूर्वक रहने लगी।

भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो श्रद्धा और भक्ति से देवशयनी एकादशी का व्रत करता है,

उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा अंत में वह मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।"

देवशयनी एकादशी का महत्व

इसी दिन से भगवान श्रीविष्णु चार माह के लिए योगनिद्रा में प्रवेश करते हैं।

चातुर्मास का आरम्भ इसी तिथि से होता है।

इस दिन से विवाह, गृहप्रवेश और अन्य मांगलिक कार्य सामान्यतः

चातुर्मास समाप्त होने तक स्थगित रखे जाते हैं।

भगवान विष्णु, माता लक्ष्मी और तुलसी जी की विशेष पूजा का विधान है।

कथा का संदेश

धर्म, भक्ति और भगवान पर अटूट विश्वास से बड़े से बड़ा संकट दूर हो सकता है।

एकादशी व्रत केवल व्यक्तिगत कल्याण ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के मंगल का भी माध्यम है।

दया, धर्म और अहिंसा का पालन भगवान को अत्यंत प्रिय है।

भगवान विष्णु की कृपा से जीवन में सुख, शांति और समृद्धि प्राप्त होती है।

देवशयनी एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु आषाढ़ शुक्ल पक्ष की देवशयनी एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, परिवार में सुख-समृद्धि आती है, चातुर्मास के पुण्य का लाभ मिलता है तथा अंत में उसे भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री देवशयनी एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥